

बकरियों के गैर संक्रामक (उपापचयी) रोग



संजय कुमार भारती¹ एवं
जयकिशन प्रसाद²

¹विभागाध्यक्ष,
पशु शरीर रचना विभाग,
²अधिष्ठाता बिहार पशु चिकित्सा
महाविद्यालय, बिहार पशु विज्ञान
विश्वविद्यालय, पटना-14

अनुउपयुक्त आहार, खराब प्रबन्धन के कारण बकरियों में अनेक गैर संक्रामक रोग हो जाते हैं। उनमें कुछ प्रमुख रोग निम्नवत हैं—

1. अफरा

यह सामान्यता बकरी में होने वाला प्रमुख रोग है। इस रोग में रुमेन में उत्पन्न होने वाली अत्याधिक गैस एकट्टा हो जाती है जिसके कारण रुमेन में उत्पन्न हुए गैस का पेट से बाहर निकालने में बाधित हो जाता है।

अफरा के प्रकार

1. तीव्र अफरा
2. दीर्घ स्थायी

तीव्र अफरा

ग्रासनली में अवरोध से अथवा चारे में अचानक बदलाव के कारण या अत्याधिक हरा चारा (बरसीम, लूसर्न, लोबिया इत्यादि) खिलाने के कारण जो कि ओस या वारिस से भीगे तीव्र अफरा हो सकता है।

दीर्घ स्थायी अफरा

ग्रासनली में वायु के निगलने में होने वाली बाधा से हो सकता है। ग्रासनली में ये बाधा किसी दबाव या बिना किसी दबाव के कारण जैसे ट्यूमर, बाह्य वस्तु, बड़े हुए लिम्फ नोड (लसिका ग्रंथियाँ, घाव सिकुड़न या फेलाव) आदि से होता है।

अफरा के कारण

- कुछ हरे चारों में हाइड्रोजन साइनायड होता है जो कि विषैला होता है और इससे

रुमेन एवं रेटिकुलम के मांस पेशियों का पक्षाघात (पैरालीसिम) हो जाता है जो गैस को बाहर निकलने में रुकावट करता है।

- कुछ हरे चारे में फास्फोट होता है जो कि आरसेनेट से क्रिया करके किण्वन की प्रक्रिया (फरमेन्टेशन) को बढ़ाता है जिससे बहुत ज्यादा मात्रा में कार्बनडाइआक्साइड गैस बनती है।
- हाइड्रोजन सल्फाइड, कार्बन आर्सनाइड और कार्बनमोनो आक्साइड अधिक मात्रा में बनकर रुमेन की मांस पेशियों को पक्षाघात करते हैं।
- अत्याधिक मात्रा में हरा चारा खिलाने से रुमेन

का म्यूकस स्तर अच्छी तरह से फैल नहीं पाता और मांस पेशियों में प्रतिक्षेप क्रिया द्वारा होने वाली संकुचन क्रिया पर्याप्त नहीं होती हैं जबकि हरे चारे में कड़े रेशे कम होते हैं।

- बकरियों के लार में झाग न बनने के कारण अफरा को रोकने में बहुत मदद करता है। कार्डिया का भौतिक उद्दीपन मुख्यतया सूखे चारे द्वारा किया जाता है जो कि लार के स्रवण को बढ़ा देता है परन्तु रसीले हरे चारे के कारण छोटे पौधे को खिलाने से लार बहुत कम मात्रा में बनता है। और इसलिए झाग का बनना रुक पाता और

अफरा हो जाता है। अतः भूसा या सूखा चारा भी रसीले हरे चारे के साथ साथ बकरियों को देना चाहिए। लार में उपस्थित म्यूसीन फेन के बनने से रोकता है।

अफरा दो प्रकार का होता है—

- सूखा अफरा
- झागदार अफरा

सूखा अफरा

कम हानिकारक होता है क्योंकि यह केवल गैस की उपस्थिति के कारण होता है और इससे डकार द्वारा मुक्ति पायी जा सकती है। परन्तु झागदार अफरा में गैस छोटे छोटे बुलबुले के रूप में रुमेन के तरल पदार्थ में फँस जाती है और झाग का रूप में लेती है जो आसानी से डकार द्वारा बाहर नहीं निकाली जा सकती है।

झागदार अफरा के कारण निम्नलिखित हैं—

- कुछ पौधों में सेपोनीन बहुत पाया जाता है। सेपोनीन एक बहुत अच्छा साबुनीकरण तत्व है जो झाग बनने में मदद करता है।
- पानी में विलेय हरे चारे को प्रोटीन झाग बनाने में सहायक होता है।

- प्रपट तनाव और श्यानता में बदलाव के कारण झागदार अफरा होता है। यह पाया गया है कि खिलाने के समय चारे के प्रकार और पानी की मात्रा श्यानता एवं प्रपट तनाव में बदलाव के कारण होती है जो कि श्यानता बढ़ाते हैं और प्रपट तनाव कम करते हैं, उससे ही झागदार अफरा उत्पन्न होती है।

- सामान्यतया रुमेन में जीवाणुओं की क्रिया द्वारा वसीय अम्ल अल्पन्तहोते हैं जो कि सरफेस टेन्सन बढ़ाते हैं। यदि किसी प्रकार बसीय अम्लों का उत्पादन कम हो जाये तो सरफेस टेन्सन कम हो जाता है जिससे झागदार अफरा हो जाता है। इसी कारण उपचार में वनस्पति तेल प्रयोग करते हैं।

अफरा के कारण रुमेन फैल जाने से दूसरे उदरीय अंग दब जाते हैं जिससे पतले दीवार वाली सिराओं के दब जाने से रूधिर परिसंचरण भी बाधित होता है।

इसके साथ-साथ डायफ्राम पर भी दबाव पड़ता है जिससे फेफड़ा

छोटा हो जाता है। जिससे स्वास रूक कर मृत्यु हो जाती है।

2. किटोसिस

थकटोसिस एसीटोनीमिया के नाम से भी जाना जाता है। यह रोग कार्बोहाइड्रेट एवं बसा उपापचय की गढ़बड़ी से होता है। यह बकरी में दुग्ध ज्यार के बाद दूसरी मुख्य गंभीर बीमारी होती है। इस रोग को रूधिर, मूत्र तथा दुग्ध में कीटोन की उपस्थिति से रूधिर में सुगर की कमी और यकृत में ग्लाइकोजन की कमी द्वारा पहचाना जाता है।

किटोसिस के प्रकार

- प्राथमिक किटोसिस
- द्वितीय किटोसिस
- पोषकीय किटोसिस

प्राथमिक कीटोसिस

यह स्थिति किसी लगातार कम शर्करा युक्त आहार के उपयोग से ब्याने के कुछ हफ्तों पहले स्वतंत्र रूप से होती है।

द्वितीय किटोसिस

यह स्थिति लगातार किसी रोग के कारण भूख की कमी, चारा कम खाने तथा कुछ अन्यबीमारियों जैसे एबोमैजम एवं रेटिकुलम की बीमारियाँ, रेटिकिलो पेरिटोनाइटिस, थनैला, मेट्राइटिस तथा जेर रूक जाने से होता है।

पोषकीय किटोसिस

पोषण में कमी के कारण होती है।

कारण—

कीटोन बनाने वाले एसिड, कार्बोहाइड्रेट पाचन के अन्तिम उत्पाद होते हैं जैसे एसिटिक एसिड, प्रोपियोनिक एसिड, ब्यूटाटिक एसिड, जो कि एसिवाइल कोएन्जाइम ए से मिलकर क्रैब्स साइकिल और इलेक्ट्रान स्थानान्तरण तंत्र में पहुँचकर कार्बन डाइऑक्साइड जल और ऊर्जा देते हैं। परन्तु यदि आक्जेको एसिटेट का उपयुक्त मात्रा में उपलब्ध नहीं हो तो एसिटिक को एन्जाइम ए एकट्टा होने लगता है और एसिटिक कोइन्जाइम के एक और दो अणु मिलकर एसिटो एसिटेट कोइन्जाइम बनाते हैं। फिर एीससीलोशन द्वारा एमीटोएसिड बनता है जो कि इन्जाइम द्वारा अपचयित होकर हाइड्रेट ब्यूटाइरेट बनाता है। एसिटोन एसिटोसिटेट से डीकार्बोक्सिलीकरण द्वारा बनता है। इस प्रकार कीटोसिस उत्पन्न होती है।

कीटोसिस के अन्य कारण निम्नलिखित हैं।

- भोजन में पोषकीय कमी।
- कोइन्जाइम ए की कमी।
- एड्रीनल कार्टेक्स के पूरी तरह से कम न करने से।
- थायराक्सीन की कमी।
- व्यायाम की कमी।
- यकृत की बीमारियों के कारण।

- भूख न लगने से।

कीटोसिस के लक्षण

- बकरी में कीटोनीमिया के साथ साथ सामान्यतया मूत्र के साथ भी कीटोन आते हैं। दूध कम हो जाता है। भूख नहीं लगती है।
- बकरी में एसिटोन एवं क्लोरोफार्म की तरह गंध आती है।
- मल बहुत कड़ा तथा म्यूकस से घिरा हुआ होता है। कभी कभी ढीला मल भी आता है।
- योनि स्राव भी सामान्यतया देखने को मिलता है।
- थन अक्सर सूज जाता है तथा साथ साथ उसके सतह की शिरयें दिखने लगती हैं।
- निर्जलीकरण और कामा के कारण साधारणतया मृत्यु हो जाती है।

कीटोसिस का उपचार

- गलाइकोजन (ग्लूकोज) विलय अंतःशीरीय या कैल्सियम बोरोग्लाकोनेट
- सोडियम प्रोपीओनेट, लैक्टेट ग्लोसीरल या प्रोपिनील ग्लाकोजन खिलाने के लिए देते हैं।
- कार्टीसोन हारमोन या थाइराक्सिस हारमोन्स

अंतः मांसपेशीय या अंतः सीरीय दिया जा सकता है।

1. ट्रोमैटिक रोटीकुलर पेरीकार्डाइटिस

यह पुरानी उम्र की बकरियों में बहुत अधिक मिलता है। इसमें बकरी अपने चारे के साथ विभिन्न प्रकार की तीक्ष्ण वस्तुओं को जैसे सुई, नाखून, तार के टुकड़े, रूई कील आदि खा जाती है या निगल जाती है। रूमेन एवं रेटिकुलम के संकुचन के कारण या गर्भावस्था के समय दबाव पड़ने के कारण स्थिति बिगड़ जाती है जो डायफ्राम को छेदकर पेरीकार्डियम में पहुँच सकती है और इसी प्रकार हृदय में पहुँच कर सूजन पैदा कर सकती है या कभी कभी यह नीचे की ओर झुक जाती है जिससे छाती की दीवार को छेद कर जीफॉयड कार्टिलेज के पास पहुँच जाती है और वहाँ घाव बन जाते हैं। रेटिकुलम के छेदने के बाद पेरीटोनाइटिस पैदा कर सकती है। कभी-कभी नुकीले वस्तु फेफड़े, यकृत, प्लाही की छेद सकते हैं। यदि कोई बाहरी संक्रमण न हो तो केवल घाव भर जाता है लेकिन पेरीकार्डियम के प्रभावित होने पर मवाद की ताहर की तरल पदार्थ बन जाता है डायफ्राम के छेद हो जाने से डायफ्राम में

हार्निया हो सकती है। लीवर एवं प्लीहा में घाव हो सकते हैं और बायीं गेस्ट्रोइपीप्लोइक धमनी नष्ट हो जाती है जिससे मृत्यु हो सकती है।

2. रूमेन एवं रेटीकुलम का बाधित हो जाना

यह बकरियों में होने वाला रोग है। इसका मुख्य लक्षण यह है कि रूमेन कार्य करना बन्द कर देता है। इसकी मांस पेशियाँ संकुचन नहीं कर पाती और इसलिए ग्रहण किया हुआ भोजन स्थिर पड़ा रहता है।

कारण

- अत्यधिक किण्वित होने वाले कार्बोहाइड्रेट चारे के ज्यादा मात्रा ख लेने से होता है।
- रूमेन या रेटीकुलम की दीवार का किसी तीक्ष्ण वस्तु से छेद हो जाने से होता है जैसे तार, नाखून, कील आदि।
- पनी की कमी से
- दोषयुक्त या अपर्याप्त जुगाली और अपर्याप्त लार के स्रवण से।
- रूमेनकी मांस पेशियों में पक्षाघात के कारण वेगस तंत्रिका में चोट के कारण, ट्यूमर या घाव के दबाव के कारण।
- थ्लम्फनोड में सूजन के कारण।

- रूमेन में एटोनी के कारण व्यायाम में कमी तथा दुबले होना, रूमेन बहुत अच्छी तरह भर जाने से जीवाणुओं में वृद्धि के लिए स्थान नहीं मिल पाता जिससे सामान्यतया किण्वन तथा पाचन क्रिया बाधित होती है। यह रूमेन एवं रेटीकुलम के दीवार के संकुचन को भी कम करता है जिससे भोज्य पदार्थ अच्छी तरह से मिल नहीं पाता है। इससे रूका हुआ भोजन सड़ने लगता है जिससे बुरा गैस वाली गंध निकलने लगती है। भूख की कमी हो जाती है और बकरी जुगाली करना बन्द कर देती है। कुछ बकरियों में दस्त भी होता है। जिससे अधपचा चारा मिलता है और आंतों में जलन होने लगती है।

3. कोलीक

इसका अर्थ उदर में दर्द होना है। एक लक्षण है, जो कि बकरियों में विभिन्न बीमारियों द्वारा ग्रसित होने पर देखा जाता है। जिन बकरियों को कोलीक होता है वह चिन्तित दिखती हैं, लेट जाती हैं और बार-बार

उठती हैं व जमीन पर लेटती है।

लक्षण

- पेट की ओर लेखती हैं।
- पेट के तीव्र या चिरस्थायी फैलाव।
- बार बार उठना बैठना।

4. दुग्ध ज्वर

ब्याने के तुरन्त बाद बकरियाँ कैल्सियम की कमी के कारण दुग्ध ज्वर से पीड़ित हो जाती हैं। सिन्ड्रोम जो इस रोग दिखने में मिलते हैं। टिटैनी, जमीन पर पड़ जाना किन्तु बुखार का न होना और मृत्यु हो जाना है। दुग्ध ज्वर मुख्यतया अत्यधिक दूध देने वाली बकरियों में तथा प्रचुर मात्रा में कैल्सीयम एवं फास्फोरस में कमी गर्भावस्था के समय हो जाना है। बकरी को भूख नहीं लगती, दाँत किड़किड़ाती है। पैरों में कड़ापन होने लगता है और सूख जाती हैं। बकरी पूरी तरह से सुस्त हो जाती है। कोमा मे पहुँच जाती है और समय से इलाज नहीं किया जाता है तो मर जाती है। रूधिर कैल्सियम एवं फास्फोरस स्तर सामान्य से कम हो जाता है। चिकित्सा हेतु अंतःशीरीय कैल्सियम बोरोग्लूकोनेट देते हैं। जब दवा दी जाती है तब

फायदा हो जाता है। पशु वातावरण में रूचि लेने लगता है और खाना शुरू कर देता है। स्थिति से बचने के लिए गर्भावस्था के अन्तिम समय में फास्फोरस की अधिक तथा कैल्शियम की कमी वाला आहार देना चाहिए।

5. घेंघा रोग

यह रोग आयोडीन की कमी के कारण होता है। अतः उन क्षेत्रों में जहाँ आयोडीन की कमी होती है, वहाँ की बकरियों में आयोडीन की कमी से घेंघा रोग हो जाता है। आयोडीन की कमी को पूरा करने के लिए थायरायड ग्रंथि की क्रियाशीलता एवं कोशिकाएँ आयोडीन की कमी को पूरा करने (अत्यधिक आयोडीन पाने के लिए) अधिक थायराक्सि निर्माण करने लगती हैं। इस प्रकार थायरायड ग्रंथि का आकार बढ़ जाता है जिससे गर्दन के नीचे थायरायड ग्रंथि काफी बड़े आकार की हो जाती है। इससे उत्पन्न रोग को घेंघा रोग कहते हैं।

6. ग्रासटिटैनी

वे बकरियाँ जो गाभिन होती हैं या ब्यायी होती हैं उनमें नया उगा चारा खाने से इस स्थिति का खतरा ज्यादा रहता है।

कारण

- चारागाह में कैल्शियम की कमी के कारण उत्पन्न होती है अथवा किसी प्रकार से मैग्नीशियम के उपापचय में गड़बड़ी होने के कारण होती है।
- प्रोटीन की अधिकता वाले आहार रूमेन में अमोनिया बनने के कारण क्योंकि अमोनिया गैस मैग्नीशियम के अवशोषण को रोकती है।
- अधिक मात्रा में गेहूँ के पौधों को खा लेने से होता है जो कि रूधिर में मैग्नीशियम के स्तर को घटा देता है।
- ठंडे के मौसम में थायरायड ग्रंथि के अत्याधिक सक्रिय होने से मैग्नीशियम की कमी हो जाती है।

7. पाइका

यह बीमारी फास्फोरस की कमी के कारण होती है। प्रायः उन स्थानों की बकरियों में देखने को मिलती है जहाँ की भूमि फास्फोरस की कमी वाली होती है। इससे भूख घट जाती है और जानवर घरों की दीवार एवं अन्य बड़े वस्तुओं को चाटना शुरू कर देता है।

यह बीमारी भोज्य पदार्थ में फास्फोरस की मात्रा बढ़ा देने से दूर हो जाती है। इसे दूर करने के लिए कैल्शियम भी दिया जाता है जिससे कि कैल्शियम और फास्फोरस का संतुलन बना रहे

8. सुखा रोग

यह बढ़ने वाले बच्चों में सामान्यतः हड्डी में कैल्शियम के पर्याप्त रूप से न होने के कारण होता है। इसी प्रकार की स्थिति, पौढ़ बकरियों में, जिनकी हड्डी का विकास रुक चुकी होती है, आस्टियो मलेशिया कहलाता है जिसका शाब्दिक अर्थ होता है—हड्डी का मुलायमपन हो जाना। सुखा रोग कुछ आवश्यक तत्वों की कमी के कारण होता है। कैल्शियम, फास्फेट, विटामिन डी की कमी इनमें प्रमुख हैं। इसके कमी के कई कारण होते हैं—

कैल्शियम की कमी

- आहार में कैल्शियम की कमी।
- कैल्शियम एवं फास्फोरस का उचित संतुलन न होने पर।
- कैल्शियम का अवशोषण न होने के कारण।
- कुछ अधुलनशील काम्प्लेक्स जैसे कैल्शियम आक्सलट के फाइटेट आदि बनने के कारण।
- विकासशील बकरी के बच्चे में माँग की अधिकता के कारण।

फास्फोरस की कमी

आहार में फास्फोरस का कम मात्रा में होना। आंत में बनने वाले कुछ अम्लों से क्रिया करने के बदलाव होने के कारण अधुलनशील काम्पोलेक्सो में बनने के कारण।

विटामिन डी की कमी

- मल से बसा का निकलना।
- यकृत की बीमारियों के कारण।
- सूर्य के प्रकाश की कमी के कारण।

लक्षण

- बच्चों का विकास रुक जाता है और पैर धनुष के आकार का हो जाता है।
- उदर बाहर की तरफ निकल जाता है।

9. फ्लोरोसिस

यह भूमि में उपलब्ध जल में फ्लोरीन की मात्रा अधिक होने से होती है। फ्लोरीन की विषाक्तता चिरस्थायी स्थिति में होती है जो कि पीने के पानी और चारे में लोरीन की अधिक मात्रा होने से होती है। फ्लोरोसिस बकरियों में रॉक फास्फेट खिलाने से भी होता है जो कि फास्फेरस की कमी को पूरा करने के लिए दिया जाता है। फ्लोरोसिस के लक्षण, दाँत एवं हड्डियों में देखने को मिलता है। प्रभावित दाँत अपारदर्शी चाक की तरह उस पर बड़ी

रेखाएँ एवं गड्डे दिखाई देते हैं। वे मसूढ़ों से भी गिर सकते हैं। हड्डियाँ में मुख्यतः मेटाकारपल मोटा हो जाता है तथा फैलेन्जेज छोटी, मोटी एवं चौड़ी हो जाती है।

10. कॉपर की कमी

कई बार बकरियाँ अचानक मौत की घाट उतर जाती हैं। यह बिना दस्त एवं डायरिया के लक्षण के होती है। इसमें एनीमिया हो जाती है और मायोकार्डियम का साइटोक्रोम सिस्टम भी नष्ट हो जाता है। लम्बी अस्थियों के सिरे घुस जाते हैं। अस्थियाँ भंगूर हो जाती हैं। कई बार पसलियाँ फीमर या ह्युमरस में अनेक फ्रेक्चर हो जाता है। इसकी कमी के कारण बकरियाँ घास नहीं खाती हैं तथा बहुत परेशानी से बच्चा देती हैं।

11. कोबाल्ट की कमी

कोबाल्ट विटामिन बी 12 की मुख्य अवयव है जो कि रूधिर निर्माण के लिए आवश्यक है। इसकी कमी के कारण एनीमिध हो जाती है। यदि कोबाल्ट की कमी भूमि में है तो इसकी कमी बकरियों में हो जाती है। यह रूमेन के सूक्ष्म जीवों के द्वारा होने वाला विटामिन बी 12 की संश्लेषण के लिए आवश्यक है।

12. सेलेनियम की कमी

सेलेनियम कोशिकाओं में जैविक क्रियाओं के लिए आवश्यक है। इसका कार्य विटामिन-ई की तरह से होता है। इसे विटामिन के स्थान पर नहीं दिया जा सकता है परन्तु विटामिन-ई कुछ हद तक इसकी कमी को पूरा करता है परन्तु वृद्धिवर्धक प्रभाव नहीं दिखाता है।

सेलेनियम के तीव्र विषाक्तता में (अधिक सेलेनियम) चारे में खिलाने पर श्वास, एवं हृदय संबंधी रोग तथा बार-बार पेशाब करना देखा गया है। क्योंकि उदर में आराम न होने से बकरियाँ इधर-उधर घूमती हैं। वे अपना सिर किसी कठोर वस्तु पर दबा सकती हैं। फेफड़ों में परेशानी के कारण सांस लेने में परेशानी आती है और शरीर पीला हो जाता है तथा मृत्यु भी हो जाती है।

13. विटामिन-ई की कमी

विटामिन-ई की कमी से बाँझपन हो जाता है। इसका रासायनिक नाम टोकोफेराल। इसका अर्थ होता है कि गर्भावस्था को स्थिर रखना। वसा विलेय विटामिन है। यह अनाजों के अमाने वाले एवं हर पौधों में मिलता है। यह अनाजों के जमने वाले अंग एवं हर पौधों में मिलता है। यह आक्सीकरण को भी रोकता है। मुख्यतः मॉसपेशियाँ, वसा एवं यकृत के

आक्सीकरण होने को बचाता है। इसके अनुपस्थिति से आक्सीकरण 400 गुना बढ़ जाता है तथा क्षय रोग शुरू हो जाता है।

कॉडलीवर आयल एवं वसा की अधिकता विटामिन-ई की कमी का लक्षण उत्पन्न करता है। इसकी कमी निम्न स्थितियों में हो सकती है। जब जानवर को केवल रातिब मिश्रण पर ही रखा जाये। उसको हरा चारा न मिलता हो। बच्चे जो केवल दूध पर ही निर्भर रहते हैं उनमें विटामिन-ई की कमी होती है। जिस राशन में असंतृप्त वसा अम्लों का प्रतिशत अधिक हो विटामिन-ई को नष्ट कर देता है।

14. रतौधी

यह विटामिन ए की कमी के कारण होने वाला रोग है। रोटिना की राड अंधेरे में दृष्टि के लिए आवश्यक होती है। इन राड्स पर रोडोप्सीन होता है। प्रकाश पड़ने पर यह रेटिनीन एवं आप्सीन में टूट जाता है। रेटिनीन विटामिन ए एल्डिहाइड होता है, आप्सीन एक प्रोटीन होता है। इसके टूटने के समय तंत्रिका संवेदन आप्सीक तंत्रिका से होकर दिमाग की तरफ जाती है। अंधेरे में क्रिया उत्पन्न होती है इस क्रिया में कुछ रेटिनीन की मात्रा खर्च होती है जिसकी

कमी पूरा करने के लिए रक्त से विटामिन ए की आवश्यकता होती है अतः विटामिन ए की कमी रूधिर में हो जाए तो पर्याप्त मात्रा में रेटिनीन नहीं बन पाता है और जानवर कम प्रकाश में नहीं देख सकता है। यह अवस्था ही रतौधी है।

15. पीलिया

इस स्थिति में म्यूकस झिल्ली पिले रंग की दिखती है। रक्त सीरम में बीलीरूवीन की अधिकता में उपस्थिति के कारण रूधिर में अंधिक मात्रा में विलीरूवीन या तो अधिक संख्या में लाल रक्त कणिका के नष्ट होने से या लीवर द्वारा पूरी तरह से रक्त से उत्सर्जित नहीं हो पाने से यह रूधिर में उपस्थित हो जाता है।

लाल रक्त कणिका की अत्याधिक हीमोलिसिस के कारण होता है। चूँकि यह रूधिर में यकृत के पास होने से पहले ही बीलीरूबीन की मात्रा अधिक होती है अतः इसे पूर्व हिपैटिक ज्वाइंडिस कहते हैं।

ब्लड डमें बीलीरूवीन की अधिकता लीवर की खराबी के कारण होती है अतः हिपैटिक पीलिया कहते हैं। चूँकि लीवर में खराबी कुछ विशेष पदार्थ के कारण होती है अतः विषैले

पदार्थ के कारण टाक्सीक पीलिया कहते हैं। बीलीरूविन की मात्रा पित्त नली में रुकावट के कारण होती है। इसे अवरोधी पीलिया कहते हैं। चूँकि रक्त से बीलीरूविन रूधिर के लीवर में पास हो जाने के बाद होता है इसलिए इस हिपैटिक पीलिया कहते हैं।

16. डिस्टोकिया (बच्चे का फँस जाना)

यह बकरियों में किसी वजह से बच्चे के फँस जाने की स्थिति में होता है। इससे बच्चा प्रकृतिक रूप से अपने आप बाहर नहीं निकलता है।

कारण

- गर्भाशय का घूम जाना।
- पेलवीक के सतह पर होना।
- बच्चे का अगला भाग निकलने के वजाय पिछला भाग पहले निकलना।
- भ्रूण के घूम जाने से किसी अंग का बहुत अधिक विकास हो जाना।
- बच्चे का गर्भाशय के अंदर मृत्यु हो जाना।

मादा बकरी में हारमोन्स का स्रावण उपयुक्त मात्रा में न होना।